हरेकृष्ण डेका की तीन कविताएं

अनुवादक: विनोद रिंगानिया

(1)

किसी को यदि ईश्वर मिले तो

आप में से यदि किसी को ईश्वर मिले तो
मुझे बताना और मैं उनके पास जाकर कहूँगा
कि उनका इतने अलग-अलग नाम रखना उचित नहीं है

इतने भिन्न-भिन्न पंथ
भिन्न-भिन्न धर्ममत
भिन्न-भिन्न निषेधाज्ञाएँ
इतने अलग-अलग समर्पण और त्याग।
उनके नाम से निर्मित हों विभिन्न स्थापत्य
अंकित हों विभिन्न पोथी चित्र
गाए जाएँ भिन्न भिन्न भक्ति गीत
लिखी जाएँ भिन्न भिन्न किताबें
रचे जाएँ भिन्न भिन्न नृत्य।

एक दिन उनके अलग-अलग नामों से
इतनी अधिक उष्मा पैदा होगी
अलग-अलग पवित्रताओं की रक्षा करने
इतने अधिक संघात होंगे
कि
सभी मारकाट करते हुए
अलग-अलग रास्तों से होकर उनके यहाँ जाएँगे।
उनकी आत्माएँ दौड़ में एक-दूसरे को पछाड़ने की
कोशिश करते हुए भी
सभी एक ही समय पर उनके घर पहुँचेगीं
और देखेंगी कि वे घर पर नहीं हैं।

(2)

प्रव्रजक

कौन सा स्थान या कौन सा देश तुम्हारा अपना है
कौन सी जमीन?
तुम जिस पर खड़े हो वह जमीन तुम्हारी है
या
वह स्थान जिसकी सीमा नक्शे में निर्धारित है
लेकिन भूपृष्ठ पर जिसकी सीमा नहीं है?
कौन से स्थान या जमीन का कौन सा टुकड़ा
तुम्हें अपना बतलाता है? क्या जमीन का वह टुकड़ा
तुम्हें स्थायी बाशिंदा कहकर स्वीकार करता है?

प्रव्रजक,
तुम्हारी देह की भष्म या कब्र के ऊपर बने स्मृति चिह्न
जमीन के जिस टुकड़े पर
विश्राम करते हैं
वह जमीन भी तुम्हारी नहीं है।
कोई और आकर उसी जगह विश्राम करेगा।
तुम्हारे पीछे-पीछे असंख्य प्रव्रजकों की
कतार लगी हुई है।

(3)

जंगल भी कभी-कभी अपने आपको जलाता है

जंगल कभी-कभी अपने आपको जलाता है
जब तरु-तृण हो जाते हैं विश्रृंखल।
जंगल को भी चाहिए एक संसार
परिष्कार।
लेकिन वह अपने सीने में छुपा रखता है
बीज नूतन के।

बारिश आने पर
जंगल नया रचता है,
बढ़ते अंकुरों से
पत्र-पल्लव के आह्वान से।
बढ़ने पर अराजकता,
सरल है कर पाना खत्मा
विश्रृंखल व्यवस्था का,
लेकिन यदि न हो नया रचने का उद्यम
हो केवल ध्वंस का आह्वान,
तो ऐसा ध्वंस बन जाता है श्मशान
की अराजक निस्तब्धता।
सृष्टिहीन निष्फल शून्यता।

*(**लेखकीय परिचय:** हरेकृष्ण डेका समकालीन असमिया साहित्य के प्रमुख कवि, कथाकार एवं अनुवादक हैं। हरेकृष्ण की कविताओं का अनुवाद विनोद रिंगानिया ने किया है जो पत्रकार के रूप में गुवाहाटी-असम से प्रकाशित पूर्वञ्चल प्रहरी, दैनिक पूर्वोदय आदि के संपादन कार्य से संबद्ध हैं।)*

***